

आचार्य कुन्दकुन्द पूजन

(ताटंक)

हे कुन्दकुन्द आचार्य श्री, चैतन्य ऋद्धिधारी प्रणाम ।
 हे गगन बिहारी मुनि पुंगव, चैतन्य चक्रवर्ती ललाम ॥
 परमागम परमामृत रचना कर, कलीकाल सर्वज्ञ हुये ।
 हे मूल संघ के अधिनायक, तुम जैसे जग में तुम्ही हुये ॥
 आह्वानन करके आज तुम्हें, अपने मन में पधराऊँगा ।
 अपने उर के सिंहासन पर, गदगद हो नाथ बिठाऊँगा ॥
 मेरा आंगन पावन कर दो, हे नाथ हृदय में आ जाओ ।
 मेरे चैतन्य जिनालय में, हे मुनिवर आप समा जाओ ॥

(दोहा)

हुये न हैं न होयेंगे, कुन्दकुन्द से देव ।

महाभाग्य गुरुवर मिले, सहज मिटे भव टेव ॥

ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव ! अत्र अवतर - अवतर संवैषट् आह्वानम् ।
 ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
 ॐ ह्रीं श्री कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द देव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव
 वषट् सन्निधिकरणम् । पुष्पांजलि क्षिपामि ।

(वीर)

परमागम का मकरंद अहो, मुनिवर निर्झर से झरता है ।
 परमामृत सेवन कर भविजन, चैतन्य कमल दल खिलता है ॥
 भगवान् आत्मा सुनते ही, मिलती है शान्ति सहज स्वामी ।
 निर्मल जल चरण चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
 ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति ...
 प्रभु सहज शान्त जीवन जीते, नहिं शत्रु मित्र का नाम कहीं ।
 चंदन-सी महक रही परिणति, करते समता रसपान सही ॥
 अहमिक्को खलु शुद्धो निर्मम, यह शान्ति मंत्र दातानामी ।
 चरणों में चंदन अर्पित है, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
 ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति...

- चेतन की प्राण प्रतिष्ठा कर, अक्षय पद तुमने अपनाया ।
 अक्षय स्वभाव का अनुभव कर, अक्षय वैभव ही दर्शाया ॥
 ध्रुव अचल अनूपम गति पाऊँ, हो सफल साधना जग नामी ।
 अक्षत प्रभु चरण चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ।
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति...
 शुभ-अशुभ विभावी भावों से, बस गुरुवर तुम्ही बचाते हो ।
 आकिंचन अर ब्रह्मचर्य धर्म की, सबको सीख सिखाते हो ॥
 विषयों में सुख की अभिलाषा से, सुखी कौन होगा स्वामी ।
 चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति...
 निर्दोष सरस आहार मिले, पर उदासीन ही रहते थे ।
 शुद्धोपयोग से सहज तृप्त, आनंद रसामृत पीते थे ॥
 है क्षुधा ज्ञान का ज्ञेय मात्र, यह बोध जगाऊँ हे स्वामी ।
 नैवेद्य समर्पित करता हूँ, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति ...
 कुछ मोह भाव वो नहीं मेरा, उपयोग मात्र हूँ दर्शाया ।
 जिसमें सब ज्ञेय झलकते हैं, वह ज्ञायक प्रभु हूँ दिखलाया ॥
 हूँ समयसार शाश्वत प्रदीप, चैतन्य दीप दाता नामी ।
 मोहान्ध भाव क्षय हो जावे, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति...
 आठों कर्मों में रहकर भी, आतम अबन्ध ही रहता है ।
 गतियों में रहकर भी गति से, न्यारा अनुभव में आता है ॥
 मैं हूँ अबद्ध अस्पर्शित प्रभु, चैतन्य रत्न निरखूँ स्वामी ।
 दश धर्मों की सौरभ सुरभित हो, कुन्दकुन्द ऋषिवर स्वामी ॥
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय सकलकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति...
 जो शुद्ध स्वभाव निरखता है, वह शुद्ध बुद्ध हो जाता है ।
 जैसी दृष्टी वैसी सृष्टी, भावों का फल वो पाता है ॥
 शिवभूति मुनीश्वर सिद्ध हुये, तुष-मास मंत्र से हे स्वामी ।
 अंजन फल मिला निरंजन पद, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
- ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति...

हे श्रमण संस्कृति के गौरव, हे गगन-विहारी रमण राम ।
 हे पद्मनंदि हे वक्रग्रीव, हे कुन्दकुन्द मुनिवर प्रणाम ॥
 हे गृद्धपिच्छ, श्री मुनि पुंगव, हे एलाचार्य गुरु महान ।
 हे वीतराग विज्ञान पथिक, सतपथदर्शी हे तीर्थधाम ॥
 भक्ति भावों से अर्घ्य चढ़ा, अविचल अनर्घ्य प्रगटे स्वामी ।
 जयवंत रहे जिन धर्म सदा, हे कुन्दकुन्द ऋषिवर नामी ॥
 ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति ...

जयमाला

(दोहा)

कुन्दकुन्द की कलम को, नमन करूँ शतबार ।
 अद्भुत निधि तुम दे गये, समयसार सा सार ॥

(ताटंक)

आगर्भ दिगम्बर हे गुरुवर, हे पद्म-नंदि मुनिवर प्यारे ।
 आचार्य श्री हे मुनिपुंगव, जिन शासन के तुम रखवारे ॥
 तुमने परमागम प्राभृत रच, सर्वज्ञ विरह को भुला दिया ।
 कलिकाल कोठरी महातमा में, तुमने दिव्य प्रकाश किया ॥
 चेतन की प्राण प्रतिष्ठा की, अध्यात्म छंद तुमने गाये ।
 चिर निद्रा से हो जायें मुक्त, इस तरह दिव्य स्वर गुंजाये ॥
 मैं हूँ स्वभाव से समयसार, यह समयसार में बतलाया ।
 जो काल अनंत नहीं समझा, वह कलीकाल में दर्शाया ॥
 आचार्य श्री आत्मानुभूति में, मग्न सदा ही रहते थे ।
 अनुभव का अमृत पीते थे, भव बंधन सहज छुड़ाते थे ॥
 पौनूरमलै पर हे गुरुवर, किस पावन तिथि पर आये थे ?
 श्री समयसार जी रचने के, कैसे शुभ भाव संजोये थे ?
 भगवान आत्मा अनुभवकर, लिख गये अमर वे गाथायें ।
 मैं नहीं प्रमत्त अप्रमत्त नहीं, ज्ञायक हूँ रच दीं रचनायें ॥
 सीमंधर प्रभु के दर्शन का, गौरव गुरुवर तुमने पाया ।

चारण ऋद्धि के धनी किन्तु, चैतन्य ऋद्धि गौरव आया ॥
 हे गुरुवर शाश्वत सुखदर्शक, रत्नत्रय पंथ तुम्हारा है ।
 शुद्धोपयोगी हे सन्त नमूँ, बस आत्म धर्म सहारा है ॥
 परमागम प्राभृत भेंट दिया, अनमोल आत्मनिधि दर्शाने ।
 चैतन्य निधि को भूले थे, सब अपनी महिमा को जाने ॥
 विषयों की विषय वासना में, सारा जग पल-पल जलता है ।
 करूणा के सागर आप बिना, यह व्यथा कौन हर सकता है ?
 कैसे होंगे मुनि कुंदकुंद, कैसे छोटे लगते होंगे ?
 ले पिछी कमंडलु ग्यार वर्ष में, गज-मंथर चलते होंगे ॥
 पूरब भव में जब ग्वाला थे, तब तुमने शास्त्र का दान दिया ।
 उस ज्ञानदान के फल से ही, मानो यह ज्ञान महान मिला ॥
 वह धन्य हो गई घड़ी प्रभु, जिस क्षण समाधि की शरण बड़े ।
 कुन्दाद्री पर्वत धन्य हुआ, तुम जैसा योगी पाकर के ॥
 वह धन्य हुई शान्तला मात, जिनने ऐसे सुत को जाया ।
 वह धन्य धर्मी गुणकीर्ति पिता, जिनके घर योगी था आया ॥
 वह धन्य हुई भारत भूमि, वो धन्य हुये भोजन-पानी ।
 वे धन्य धर्मि-दाता जय हो, जय हो श्री कुन्दकुन्द ज्ञानी ॥

ॐ श्री आचार्य कुन्दकुन्ददेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति ...

(दोहा)

कुन्दकुन्द आचार्य की, महिमा अपरम्पार ।

परम भक्ति हृदय बसी, यही करे भव पार ॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि ॥

ज्ञानदान का स्वरूप और फल-

विद्या हि विद्यमानेयं वितीर्णापि प्रकृष्यते।

नाकृष्यते च चौराद्यैः पुष्यत्येव मनीषितम् ॥

किसी को भी विद्या देने से वह घटती नहीं है, अपितु बढ़ती है। उस विद्या को चोर लूट नहीं सकते, बन्धु-बान्धव उसमें से हिस्सा नहीं बाँट सकते, वह विद्या तो अपने इच्छित कार्यो को पूर्ण ही करती है !